

सानुकूल क्रि.वि. (तत्.) 1. पूरी तरह अनुकूलता के साथ उदा. सानुकूल तुम्ह पर रधुराया -तुलसी।

सानुग क्रि.वि. (तत्.) 1. सेवकों के साथ 2. अनुयायियों के साथ।

सानुज वि. (तत्.) 1. अपने छोटे भाई के साथ पुं. 1. पुंडेरी नाम का वृक्ष 2. तुंबुरु नामक वृक्ष।

सानुनय क्रि.वि. (तत्.) अनुनय पूर्वक, विनय पूर्वक वि. विनम्र, शिष्ट।

सानुनासिक वि. (तत्.) 1. वह वर्ण या अक्षर जिसका उच्चारण करते समय मुख के साथ-साथ नासिका से भी अनुस्वारात्मक ध्वनि निकलती हो 2. नाक का अधिक प्रयोग कर बोलने या गाने वाला।

सानुप्रास वि. (तत्.) अनुप्रास से युक्त क्रि.वि. अनुप्रास पूर्वक/सहित।

सानुमान वि. (तत्.) अनुमान से युक्त क्रि.वि. अनुमान सहित।

सानुमान् पुं. (तत्.) चोटी युक्त पर्वत, पहाड़।

साना वि. (देश.) सूअर की तरह का एक प्रकार का जंगली जानवर।

सान्नाहिक वि. (तत्.) जो सन्नाह-कवच धारण किए हो, कवचधारी।

सान्निध्य वि. (तत्.) 1. किसी के सन्निधि या निकट होने की अवस्था या भाव, निकटता, सामीप्य 2. किहीं दो वस्तुओं या जीवों के साथ-साथ रहने की अवस्था 3. आत्मा की ईश्वर से साक्षात्कार करने की अवस्था या स्थिति जैसे-उसे ईश्वर का सान्निध्य प्राप्त हो गया हो।

सान्निपातकी स्त्री. (तत्.) स्त्रियों में त्रिदोष से उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का योनिरोग।

सान्निपातिक वि. (तत्.) 1. सन्निपात संबंधी 2. वात-पित्त-कफ तीनों दोषों के योग से होने वाला रोग।

सान्न्यासिक वि. (तत्.) संन्यास युक्त पुं. संन्यासी।

सान्वय वि. (तत्.) 1. अन्वय युक्त 2. किसी विशेष अर्थ से युक्त 3. वंश परंपरा से होने वाला, आनुवंशिक क्रि.वि. अन्वयपूर्वक, परिवार या वंशजों के साथ।

साप पुं. (तद्.) दे. शाप।

सापत्न वि. (तत्.) 1. सपत्नी, सौत संबंधी 2. सौत से उत्पन्न, सौतेला पुं. सौत की संतान।

सापत्नेय वि. (तत्.) जो सपत्नी से उत्पन्न हुआ हो, सौतेला।

सापत्न्य पुं. (तत्.) 1. सपत्नी होने की अवस्था या भाव, सौतपन 2. सपत्नियों में होने वाली परस्पर द्वेषभावना, स्पर्धा 3. सौत का पुत्र 4. शत्रु।

सापत्न्यक वि. (तत्.) 1. सपत्नियों में होने वाली पारस्परिक प्रतिद्वंद्विता। 2. शत्रुता।

सापत्य वि. (तत्.) 1. जिसके कोई संतान हो 2. जो संतान के साथ हो।

सापन पुं. (देश.) सिर के बाल झड़ने का एक प्रकार का रोग।

सापना स.क्रि. (देश.) 1. किसी के अनुचित या अमर्यादित आचरण से खिन्न होकर उसके प्रति कठोर वाणी या अप्रिय भाव व्यक्त करना। शाप देना, कोसना जैसे- 'सापत' ताड़त परुष कहंता' 2. दुर्वचन बोलना, गालियाँ देना।

सापवाद वि. (तत्.) 1. अपवाद युक्त। 2. वह नियम या सिद्धांत जिसका अपवाद भी हो।

सापह्नुवातिशयोक्ति स्त्री. (तत्.) 1. अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद जिसमें रूपकातिशयोक्ति के साथ अपह्नुति भी मिली रहती है 2. कुछ काव्यशास्त्री इस अलंकार को परिसंख्या के अंतर्गत मानते हैं।

सापिंड्य पुं. (तत्.) 1. सपिंड होने की अवस्था या भाव 2. समान वंश या गोत्र वाले रोग 3. एक ही पित्तर को पिंडदान करने वाले लोग।

सापुरस पुं. (तत्.) शूरवीर, बहादुर।